

प्रश्न - अध्यास

1. गौपिण्यो द्वारा उद्व को आश्रयदान करने में क्या व्यंग्य निहित है?
- उ० • गौपिण्या उद्व को आश्रयदान इसलिए करती हैं क्योंकि वे श्री कृष्ण के अत्यंत निकट रहकर भी उनके प्रेम में अद्यक्षित नहीं हैं। और एक वे (गौपिण्या) हैं कि दूर रहकर भी श्री कृष्ण के प्रेम में विह्वल हैं। गौपिण्यो द्वारा उद्व को पाल रहकर भी प्रेम न कर सकने पर व्यंग्य निहित है।
2. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गौपिण्यो ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?
- उ० • गौपिण्यो ने अपने अनन्य प्रेम को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया है।
 1. गौपिण्या कृष्ण के प्रेम में इस प्रकार लिप्त हैं जैसे चीटि गुफ से चिपका जाती हैं।
 2. श्री कृष्ण गौपिण्यो के लिए हरित की लकड़ी के सामान हैं।
 3. उन्होंने कृष्ण को मन, व्रत, वचन से अपना लिया है।
 4. वे सौते - आगते, रात - दिन कृष्ण का ही आप आपनी रहती हैं।

3. गौपिण्यो ने कितन - कितन उदाहरणों के माध्यम से

उठव को उलाहने दिख है?

उ० • गौपित्री ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उठव को उलाहने दिख है:-

1. उठव उस बड़भागी है जो कृष्ण के प्रेम के बंधन में नहीं बंधी है।
2. गौपित्री ने उठव को कमल पत्र के सामान बताया, जो जल में रटकाट भी जल का स्पर्श नहीं करता।
3. उन्होंने उठव को तेल की गागर अर्थात् चिकना थड़ा कटकट उलाहाने दिया।
4. गौपित्री ने उठव को श्री कृष्ण की प्रेम - नसी में पोंव तक न डुबाने का उलाहाना दिया है।

4. गौपित्री ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर रानी उठव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विरोधताएं लिखिए?

उ० • गौपित्री के वाक्चातुर्य की निम्नलिखित विरोधताएं हैं:-

1. गौपित्री की बातों में गहरा व्यंग्य दिया है।
2. वे अपनी बातों को उदाहरण देकर प्रस्तुत कर रही हैं।
3. उनकी बात लोक - व्यवहारी पर आधारित है।
4. गौपित्री की बातों में उनके हृदय की सरलता और कृष्ण के प्रति अनन्य झलकता है।
5. उनके तर्क अकादमिक तथा बद्ध ही सत्य हैं।

5. गौपित्री को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उ० • गौपित्री को कृष्ण में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई दिए:-

1. पहले वे सख्त हृदय और प्रेमी थे, अब कुटील

राजनीतिक बन गए हैं।

2. पहले वे गोपियों को प्रेम का पाठ पढ़ाते थे, अब उन्हें भोग का संदेश सेंज रहे हैं।

3. पहले वे दूसरों को अन्याय से बचाते थे, अब स्वयं ही भोली-भाली गोपियों पर अन्याय कर रहे हैं।

6. उहुव द्वारा दिए गए भोग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया ?

उह गोपियों को यह विश्वास था कि श्री कृष्ण हरीश्र्वर ही लीव आईंगे परंतु श्रीकृष्ण ने उल्टा उहुव के माध्यम से भोग का संदेश सेंज दिया, इस संदेश ने अंग में घी का काम किया और उनकी हृदय की अग्नि और आध्यात्म प्रज्वलित हो उठी गोपियों उहुव से कहने लगीं कि हमारे साहस की मर्यादा अब समाप्त हो गई है इस विरह दुख को सहने का साहस अब हमसे नहीं रहा है।